RESEARCH REVIEW JOURNALS
Volume-03
Issue-12
December -2018

ISSN: 2455-3085 (Online)
RESEARCH REVIEW International Journal of Multidisciplinary
www.rrjournals.com [UGC Listed Journal]

वर्तमान हिंदी निबंधों में सांस्कृतिक चेतना (21वीं सदी के विशेष सन्दर्भ में)

मनप्रीत सिंह

शोधार्थी, लवली प्रोफेशनल यूनिवर्सिटी, जालंधर (पंजाब)

ARTICLE DETAILS

Article History
Published Online: 10 December 2018

ABSTRACT

हमारे इस शोध पत्र का उद्देश्य है वर्तमान समय में हमारे बदलते सांस्कृतिक जीवन मूल्यों को दर्शाना और भारतीय संस्कृति द्वारा समाज के कल्याण के पथ को प्रशस्त करने का प्रयास है। इस शोध पत्र में शोधार्थी इस निष्कर्ष तक पहुँचने का प्रयास करेगा की मानव चाहे व्यक्तिक, चाहे सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक, सांस्कृतिक कोई भी मूल्य अपनाये वे सम्पूर्ण मानवीय जाति एवं संतति को मान्य हों, जिससे समाज एंव विश्व के कल्याण को कोई चोट न लगे।

प्रस्तावना

संस्कृति शब्द की निष्पति 'सम' उपसर्ग लगाकर ' कृ' धातु से स्त्रीलिंग के 'किव' लगाने से होती है।इसका शाब्दिक अर्थ है साफ़ करना या परिष्कृत करना ।उसी से संस्कार, संस्कृत आदि शब्दों का निर्माण होता है । जिस समाज में मनुष्य जन्म लेता है, वहां का रीति-रिवाज ,रहन-सहन ,खान-पान संस्कृति की ही देन है ।अगर मनुष्य से उसकी संस्कृति उससे छीन ली जाये तो उसके पास रह भी क्या जायेगा, वह एक पशु मात्र ही रह जायेगा ।संस्कृति समस्त सीखे हुए व्यवहार अथवा उस व्यवहार का नाम है जो सामाजिक परम्परा से प्राप्त होता है।

मनुष्य जीवन संघर्षों में सीमित रहने वाला प्राणी मात्र न होकर सामाजिक संस्कृति का निर्माता है ।संस्कृति मानव जीवन की ऐसी अवधारणा है जो उसे गतिशील बनाए रखने का उद्यम करती है । एक ऐसा पर्यावरण है,जिसमे रहकर मनुष्य एक सामाजिक प्राणी बनने के साथ साथ प्राकृतिक दशाओं को अपने अनुकूल बनाने की क्षमता प्राप्त करता है।यह उसी क्षमता का परिणाम है कि कठिन से कठिन परिस्थितियों में भी मनुष्य स्वयं को परिवर्तित करते हुए समयानुकूल ढल जाता है।

मानव में सृष्टि के प्रारंभ से ही जीवन जीने की आकांक्षा उत्पन्न हुई और इस जीवन के सुखद क्षणों की खोज में वह सदा से प्रवृत्त रहा है ।प्रकृति के द्वारा दी गयी सुविधाओं से संतुष्ट न रहकर वह अधिक से अधिक वस्तुओं को अपने लिए उपयोगी बनाने में सदैव प्रयत्नशील रहा है।सामाजिकता के संरक्षण में पुष्पित एवं पल्लवित होने वाले भावभूमि पर यह मनुष्य का सांस्कृतिक जीवन है।प्रकृति अन्य प्राणियों को जैसा रखना चाहती है, वह वैसे ही रहते हैं, परन्तु मनुष्य अपना विकास करने के लिए दूसरे जीवधारियों से अधिक प्रयत्न करता आया है।

चेतना मनुष्य के मस्तिष्क में क्रियाशील और गतिशील भावावेग बोध की प्रक्रिया है ।इसी के माध्यम से व्यक्ति, निरीक्षण, चिंतन, शंका, तर्क-ज्ञान और इच्छा से सम्बन्ध मानसिक स्वरूपों से परिचित होता है और निश्चित समय में अपने मानस में चलने वाले घात-प्रतिघातों को परख सकता है।मनुष्य की चेतना इस बात पर निर्भर करती है कि व्यक्ति के अन्दर सोच-शक्ति, विचार शक्ति, संचित शक्ति, चिंतन शक्ति विद्यमान है और वह इनका प्रयोग कर सकता है।चेतना वह विशेष गुण है जो मनुष्य को जीवन प्रदान करती है जिसके द्वारा वास्तविकता व्यक्त होती है और जीवन के विभिन कार्य चलते रहते है ।आन्तरिक बोध द्वारा विचार, रूचि, मन और आचरण का परिष्कार एंव उन्नत करने की प्रक्रिया सांस्कृतिक चेतना है।

प्रस्तुत शोध पत्र मानव जीवन की इसी संस्कृति पर आधारित है जो भारतीय संस्कृति और मानव जीवन की दिशा और दशा को निर्धारित करने वाला एक निर्देश भी है।आज वर्तमान में हमारे देश के अंतर्गत बहुत सी सांस्कृतिक समस्याओं की भरमार बढ़ चुकी है, जो हमारे राष्ट्र की कमर

RRIJM 2015, All Rights Reserved

तोड़ रही है।स्वतन्त्रता के समय जब हमने संविधान स्वीकार किया था उस समय का भारत और आज के भारत में बहुत बदलाव आ चुका है ।आज अशिक्षा, अंधविश्वास, रूढिवादिता, दलीय- प्रतिबद्धता, पारिवारिक सम्बन्ध, बाजारवाद, पर्यावरण, पति पत्नी सम्बन्ध, विवाह समस्या, कृषि, मजदूरों का जीवन, बाल विवाह, विधवा विवाह, सास बहु सम्बन्ध, बदलते नैतिक मूल्य और सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक और धार्मिक बहुत सी समस्याओं की भरमार बढ़ चुकी है ।साहित्य के अतिरिक्त दूसरा कोई उपादान नहीं है जो इन समस्याओं का निराकरण कर सके।

किसी भी क्षेत्र के लोक जीवन एंव संस्कृति को वहां निवास करने वाले लोगों के स्वभाव, रहन-सहन, खान-पान, बोली, वेशभूषा, विविध संस्कारों, लोक विश्वास, धार्मिक प्रवृति एंव देवी देवता, पर्व एंव उत्सव, लोक कथा, लोक गीत, रीती रिवाज आदि के माध्यम से अच्छी प्रकार समझा जा सकता है।मानव जीवन के क्रिया-कलाप, आहार-विहार, आचार-विचार आदि क्रियाएं संस्कृति का धात्वर्थ है ।संस्कृति किसी जातिया देश की आत्मा है।इससे उन सब संस्कारों का बोध होता है जिनके सहारे मानव अपने सामूहिक जा सामाजिक जीवन के आदर्शों का निर्माण करता है।

वर्तमान में मानव बहुत सी समस्याओं में घिरा हुआ है।वर्तमान जीवन आज भी अंधविश्वास एंव रूढियों से ग्रस्त है जिसमे युवा पीढ़ी बर्बाद हो रही है ।कोई भी लेखक अपने युग के प्रभाव से नहीं बच सकता वह अपने वातावरण और परिवेश को अस्वीकार नहीं कर सकता ।या तो वह उस समाज और परिवेश के यथार्थ को अपनी कृतियों का आधार बनायेगा, या उससे ऊपर उठकर अति उन्नत समाज की कल्पना करेगा।साहित्य समाज का दर्पण है और समाज की दिशा निर्देशन में सहायक होता है ।भारतीय संस्कृति समाज का वह आवश्यक अंग है जो हमारे समाज को एक नया दृष्टिकोण और उच्च आदर्श को प्राप्त कराने में सहायक होते हैं।मानव एक विवेकशील प्राणी है, जो एक समाज का निर्माण करता है ।इसके पीछे उसकी सभ्यता और संस्कृति परिलक्षित होती है और इस संस्कृति और सभ्यता को उसके सिद्धांत रचते है ।स्वतंत्रता के समय और आज के वर्तमान समय में अंतर आ चुका है ।वर्तमान में मानव बहुत सी समस्याओं में घिर चुका है ।आज मानव जीवन एक दु:स्वप्न सरीखा हुआ जा रहा है।संशय, असुरक्षा, अनिश्चितता और तीव्र गति के दबाव आदमी के जीवन और उसके रोजमर्रे के कामकाज में ऐसे तनाव को जन्म दे रहे हैं जो व्यक्तिगत स्वास्थ्य के साथ-साथ सामाजिक सद्भाव को गहरा आघात पहुंचा रहे है।वर्तमान में मानव ने अपनी योजना के तहत अपना ध्यान अपनी सीमित स्व की मांगों की आपूर्ति तक संकुचित रखा है ।आज जो कुछ हो रहा है वह एक गहराते सांस्कृतिक संकट का संकेत है ।सांस्कृतिक मूल्यों की जीवन और व्यवहार में सार्थक अभि व्यक्ति है और सतर्क, संवेदनशील दृष्टि में उनकी तलाश ही हमारा मार्ग प्रशस्त कर सकती है ।आज भारत की सांस्कृतिक विविधता को संपन्नता के स्रोत के रूप में समझने समझाने की जरूरत है जिसका उपयोग समाज के विकास में किया जाये।

निबंध विधा को साहित्य की सृजनात्मक विधा के रूप में मान्यता आधुनिक युग में ही मिली है ।आधुनिक युग में ही मध्ययुगीन धार्मिक, सामाजिक रूढ़ि यों से मुक्ति का द्वार दिखाई पड़ा है ।इस मुक्ति से निबंध का गहरा सम्बन्ध है।वर्तमान के निबंधों में निबंधकारों ने अपने निबंधों में बिना किसी परिवर्तन के डाले उसे प्रमाणिक एवंसजीव रूप से प्रस्तुत कर पाठ कों को उद्वेलित कर दिया है ।कोई भी साहित्यकार अपने समय के प्रभाव से नहीं बच सकता।वर्तमान में भी ऐसे ही निबंधों में निबंधकारों ने एक एक समस्या को पाठ कों के समक्ष खड़ा कर दिया है।वर्तमान समय में ऐसी कई समस्याएँ पैदा हो गयी हैं जिसके जरिये आदर्श मानव समाज पर प्रश्न उठने लगे हैं ।भौतिकता की चकाचौंध में जीवन-मूल्यों को उपेक्षित किया गया है ।रहन-सहन, खान-पान, चाल-चलन की दृष्टि से जन-जीवन अस्त-व्यस्त रहने लगा है।स्थायित्व की आवश्यकता हर समय और समाज को होती है ।बदलते मूल्यों के साथ सामंजस्य बैठाने की प्रक्रिया सांस्कृतिक समन्वय का मार्ग प्रशस्त करती है।संस्कृति अनवरत परिवर्तित और प्रवाहित होने वाली स्थिति है जिसके दायरे में बने रहने के लिए स्वयं को परिवर्तनशील बनाना होता है ।यह परिवर्तनशीलता का ही परिणाम है कि विपदा-आपदा की कठिन से कठिन स्थिति में भी मनुष्य अपनी जिजीविषा को जीवित रखता है ।मानव समाज में जिस प्रकार हमारा जीवन निरंतर है उसी प्रकार उसे संचालित करने वाले सिद्वांत भी है, जो आगे हमारे

RRIJM 2015, All Rights Reserved

जीवन को एक नई दिशा और दशा देने के लिए सार्थक सिद्ध होते हैं।

उपसंहार

मानव जीवन के क्रिया कलाप, आहार-विहार, चिंतन-मनन, अचार-विचार आदि विशिष्ट क्रियाए संस्कृति का धात्वर्थ है।संस्कृति किसी जाति या देश की आत्मा है ।इसी तरह मानव जीवन में सदैव परिवर्तन आते रहते हैं, मानव जीवन के सत्यम, शिवम और सुंदर जीवन के लिए सदैव प्रयास किये जाते रहे है ।मानव के द्वारा हमेशा कुछ नया खोजने का प्रयास किया जाता रहा है, प्रस्तुत शोध पत्र में भी शोधकर्ता के द्वारा ऐसा ही मंगलमई प्रयास किया जायेगा, जिससे समाज और मानव व्यवहार में विकासमय पथ प्रशस्त हो सके।आज भारत की सांस्कृतिक विविधता को संपन्नता के स्रोत के रूप में समझने समझाने की जरूरत है जिसका उपयोग समाज के विकास में किया जाये ।वर्तमान समय में बदलाव आ चुका है हमारा मानव जीवन बहुत सी समस्याओं में घिरा हुआ है ।इन समस्याओं को आधार बनाकर इस शोध पत्र में इन समस्याओं का निराकरण करने का प्रयास किया गया है।

सन्दर्भ

1. मिश्र,रामदरश: छोटे-छोटे सुख,नई दिल्ली : भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन, 2006
2. वाजपेई,कैलाश :है कुछ-दीखे और,नई दिल्ली : भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन, 2012
3. परिहार, डॉ.श्रीराम : लोक की ज्ञान-परम्परा, नई दिल्ली : यश पब्लिकेशन, 2017
4. मिश्र, डॉ.कृष्णबिहारी : अराजक उल्लास, नई दिल्ली : भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन, 2010
5. दुबे, डॉ.श्यामसुन्दर : जहाँ देवता सोते है, जयपुर : बोधि प्रकाशन, 2017
6. दुबे, डॉ.श्यामसुन्दर : काल-क्रीडित, नई दिल्ली : यश पब्लिकेशन, 2017
7. दुबे, श्यामाचरण : परम्परा इतिहास बोध और संस्कृति, नई दिल्ली : राधाकृष्ण प्रकाशन,2008
8. अग्रवाल,पुरषोतम : संस्कृति:वर्चस्व और प्रतिरोध, नई दिल्ली : राजकमल प्रकाशन,2008

इन्टरनेट सहायक सामग्री

1. vishwahindijan.blogspot.com
2. www.hindisamay.com
3. www.hindisahityaniketan.com
4. shodhganga.inflibnet.ac.in

RRIJM 2015, All Rights Reserved